International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 24-07-2020; Accepted: 09-08-2020; Published: 25-08-2020
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 4; 2020; Page No. 116-117

विश्णु प्रभाकर के कथा साहित्य में चित्रित टूटते परिवश सम्बन्ध

मुत्तकुमार
असिस्टेंट प्रोफसर, हिन्दी विभाग, वेलटेक कॉलेज, आवडी, तमिलनाडु, भारत

प्रस्तावना

विश्णु प्रभाकर का हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में प्रवेष प्रेमचन्द के अंतिम दौर में हुआ है। कहानीकार के रूप में वास्तविक आरम्भ 1934 से हुआ। वे अधिकतर रचनाएँ व्यक्ति, परिवार से लेकर समाज और राश्ट्र तक संवेदनाएँ को आधार बनाकर लिखते है। विश्णु प्रभाकर हिन्दी के उन यष्स्वी एवं तपस्वी साहित्यकारों में से है जो आधी षताब्दी से भी अधिक समय से अपनी समाज और देष की चेतना उसकी आकुलता और परिवर्तन की आकांक्षा को षब्दों में रूपायित किए है उनका साहित्य भारतीय का ही साहित्य है जो सभी प्रकार का अतिवादों से स्वयं को मुक्त करके मानव और उसके समाज के दुख–दर्द, सुख–स्वप्नों के साथ मानवता की इन्द्रिय धाता को अपने केन्द्रिय में स्थापित करके चलता है।

विश्णु प्रभाकर पिछले 20वीं षताब्दी के साहित्यिक, राजनैतिक घटनाओं तथा उथल–पुथल को अपनी आँखों से देखा है और अनुभव किये है। उस समय देष की राजधानी में रहकर उनकी समस्याओं में भाग भी लिया है। इस कारण उनका लेखन उनके व्यक्तित्व के साथ–साथ जीवन की घटनाओं से प्रभावित हुआ है। इन देखी समस्याओं को अपनी कथा साहित्य में प्रस्तुत करते हुए उन समस्याओं को समाधान का भी प्रयास किया।

आधुनिक जीवन युग के दांपत्य जीवन में विघटन की प्रबल होती जा रही है। इसका मुख्य कारण दंपति के बीच में विष्वास की कमी एक दूसरे में स्वतंत्रता की चाह, एक दूसरे के प्रति आत्मसमर्पण की भावना में कमी, पति–पत्नी में विलासिता की भावना, विवाहेतर प्रेम एवं काम के सम्बन्ध, विवाह पूर्व प्रेम व काष सम्बन्ध आदि के कारण दांपत्य जीवन में दिन ब दिन टूटती जा रही है।

वैवाहिक बंधन में बँधते समय सभी पुरुश यह वादा करता है कि हम आखिर समय तक साथ–साथ जीवन बिताएँगे। लेकिन अधिकता दांपत्य जीवन में ऐसा नहीं हो पाता है दोनों के बीच में जो संबंध रहता है वह थोडे समय में टूट जाता है। कारण है कि नारी अपने आप को प्रसिद्ध साबित करने के लिए तैयार होती है। यहाँ तक कि विवाह–विच्छेद करने से भी नहीं हिचकती है ऐसा ही चित्रण 'कोई तो' नामक उपन्यास में मिलता है। तुशार और वन्दना दोनों पति–पत्नी है। वन्दना एक लेखिका है और तुशार साधारण व्यक्ति। वन्दना अपनी लेखनी में प्रसिद्धि पाने के लिए ताराषंकर साहित्यकार नामक साहित्यकार से सम्बन्ध रखती है। यह संवाद धीरे–धीरे प्रेम में बदल पाता है। तब वन्दना कुमार से तलाक देने के लिए कहती है। मैं तुम्हें धोखे में नहीं रख सकती, मैं ताराषंकर से बेहद प्यार करती है। उससे अलग होने की बात सोच नहीं पाती हूँ। तुम तलाक की अर्जी दे दो। मैं प्रतिवाद नहीं करूँगी।[1]

इसी तरह षादी के समय को दांपत्य जीवन का धर्म निभाने का वादा करके षादी करते है लेकिन उस धर्म को आखिर तक नहीं निभा पाते है। इसी कारण आजकल दांपत्य जीवन बीच में ही टूटने लगते है।

पति–पत्नी एक दूसरे के प्रति प्रेम सहयोग, आत्मसमर्पण, सेवा निश्ठा इत्यादि भावों से मुक्त होकर जब तक रहते है तब तक उनका दांपत्य जीवन संतोशमय एवं बिना किसी कठिनाई से गुजरता है। यदि संदेह की भावना उठने लगती है, तो दांपत्य जीवन संघर्शमय हो जाता है। ऐसा ही चित्रण 'अर्द्धनारीष्वर' नामक उपन्यास में देखने को मिलता है। अजित और सुगिता दोनों पति–पत्नी है। अजित अपने प्रोजेक्ट के काम पर अधिक समय तक घर से बाहर ही रहता है। इस पर उसकी पत्नी सुमिता को संदेह हो लगता है कि उसकी पति अजित किसी स्त्री के साथ सम्बद्ध रखा हुआ है। सुमिता अजित से क्रोध में कहती है – तुम प्रोजेक्ट के नाम पर यहाँ वहाँ घूमते रहते हो। साफ क्यों नहीं कहते कि व्यस्थ नहीं त्रस्त रहे हो तुम। उसी त्रस्तता को छुपाने के लिए प्रोजेक्ट का बहाना किया। अधिक से अधिक समय तक दूर रहने का बहाना। इतना दूर कि अचानक पहुँचकर चकित कर देने का अवकाष भी नहीं है। 2

इस तरह पति–पत्नी के बीच एक दूसरे के प्रति संदेह उठने पर दांपत्य जीवन संघर्श की स्थिति पैदा हो जाती है।

नर–नारी के बीच के विचारों में एकता एक दूसरे के प्रति सहयोग देने की मानसिकता या किसी न किसी प्रकार को आकर्शित होकर वैवाहिक जीवन से जुडने की आकांक्षा आदि प्रवृत्तियों को प्रेम कहते है। इस तरह प्रेम का परिणाम विधिवत् विवाह के रूप में परिणित होता है, तो प्रेम विवाह के रूप में गिना जाता है, जो युवक–युवती भौतिक आकर्शण में आपस में वैवाहिक बंधन में बंध जाता है, तो ऐसा प्रेम विवाह अधिक दिनों तक टिक नहीं पाता, ऐसा ही संदर्भ 'एक आसमान के नीचे' नामक कहानी में मारिया और सेगेई के विफल वैवाहिक जीवन से निरूपित होता है। घर–परिवार से विरोध करके मारिया सेगेई से प्रेम विवाह कर लेती है। लेकिन कुछ महीनों के बाद सर्गेई मारिया को छोडकर चला जाता है। तब मरिया अपनी गलती का एहसास करती हुई कहती है। मैं सर्गेई से इतना प्रेम करती थी षब्दों में बता नहीं सकती। माँ ने एक–दो बार संकेत भी किया कि यह लडका तेरे योग्य नहीं है पर मैं तो प्रेम के नषे में डूबी थी। हर बार यही कहकर षांत कर दिया–माँ सेर्गेई मुझे बहुत प्यार करता है और मैंने अतः सर्गेई से विवाह कर लिया और जैसा कि सब के साथ होता है। पहले पाँ–छः महीने तो यौवन के उन्माद में बीत गये और एक दिन वह चुपचाप मुझे छोडकर कहीं चला गया।[3]

आज की युवा पीढ़ी परंपराओं, विष्वासों, संस्कारों, पर आस्था नहीं रखती। इसी कारण विधर्मी प्रेम विवाह में किसी प्रकार का दोश नहीं मानते। लेकिन विवाह के बाद दोनों पति–पत्नी के बीच संस्कारों की भिन्नता से वैवाहिक जीवन विफल होता है। ऐसा ही संदर्भ 'कोई तो' नामक उपन्यास के असित में मिलता है। असित वन्दना से प्रेम करता है। असित मुसलमान है और वन्दना हिन्दू। असित प्रेम में इतना डूब जाता है कि वह धर्म परिवर्तन करके वन्दरना से विधर्मी प्रेम विवाह कर लेता है। असित को उतना आदर नहीं करती है। इसके कारण दोनों के बीच संघर्श होने

लगता है। असित वन्दना के व्यवहार से अपना दुख व्यक्त करते हुए कहता है – ''मैंने पूरे मन से उस चाहा था। तभी धर्म परिवर्तन कर सका। लेकिन जैसे जैसे प्रसिद्ध होती गई। वह निरंतर उच्छृंखल और कठोर होती गई।''[4]

स्वतंत्रता के बाद संयुक्त परिवार में विघटन की स्थिति और भी बढ़ने लगी। संयुक्त परिवार के व्यक्ति व्यक्ति के बीच के पारस्परिक सम्बन्धों में वैयक्तिक स्वतंत्र और बुद्धिवाद की ओर आवाज प्रबल हुई। मातृ–पितृ भक्ति, आज्ञाकारिता, पति भक्ति, गृहस्थ जीवन की मर्यादा आदि के स्थान पर व्यक्तिगत विचार के प्रति सद्भावना को महत्व दिया आने लगा। आज नागरिक जीवन में व्यश्टि परिवार की इच्छा होते हुए भी समश्टि रूप से एक घर में भाई–भाई मिलकर एक पारिवारिक समस्या समझने लगे। साधारणतः नगरों में बसने वाले परिवार अधिकतर नौकरी पेषा होते है। कहीं बडा भाई नगरों में बस जाता है और छोटा भाईयों की साथ लेकर उन्हें पढ़ाने लिखाने या व्यवसाय के माध्यम से उनका संरक्षक बनता है। लेकिन जब छोटा भाई की षादी हो जाती है तो भाई के प्रति आत्मीय अनुबंध होते हुए भी उसे अलग कर देना ही उचित समझता है। यदि छोटा भाई व्यवसाय के माध्यम से पर्याप्त पैसा भी कमाता है। तो उसे अलग करने के ही बडा भाई और भाभी अपनी षांति समझते है। इसी तरह का परिवेष विश्णु प्रभाकर की कहानी 'बंटवारा' में चित्रित है। इस कहानी का देवेन अपने बडे भाई और भाई के आत्मीय संरक्षण में अपने आप को सुरक्षित समझता है। भैया और भाभी का प्यार उसे माता–पिता से बढ़कर मिला था। जब उसका विवाह हो जाता है तब भैया और भाभी छोटे भाई देवेन से अब तक आत्मीय रिष्तों में समस्या उठने की षंका से देवेन को स्वयं अलग कर देते है। क्योंकि समश्टि परिवार की आधुनिक समस्याएँ है। इस सम्बन्ध में भाभी का कहना है कि देवेन मुझसे अलग हुआ है लेकिन यह ठीक ही हुआ है वह बुद्धिमान खूब कमाता है। इसीलिए कुछ दिनों से यह बात उससे मस्तिश्क में सहा रही थी कि कुटुम्ब का जीवन उसका कमाई पर अवलंबित है परंतु षासन करती है भाभी और षायद यह भी सोचा था कि भाभी का परिवार बडा है। मुरली कही का, विवाह करते ही उसको अलग कर दिया। मैंने अच्छा ही किया। 5

निष्कर्श के रूप में यह कहा जा सकता है कि इस युग में छोटी–छोटी बातों पर संदेह एवं अविष्वास के कारण एक दूसरे के बीच जो सम्बन्ध टूटते जा रहे है। यही हाल रहा तो भविश्य में कोई रिष्ते नहीं रहेगा। सभी को अलग से जीवन बिताना पडेगा।

संदर्भ सूची

1. कोई तो, उपन्यास, पृ. 80
2. अर्द्धनारीष्वर उपन्यास, पृ. 21
3. एक आसमान के नीचे (जिन्दगी एक रिहर्सल कहानी संग्रह), पृ. 210
4. कोई तो, उपन्यास, पृ. 80
5. बँटवारा, (मुरब्बी कहानी संग्रह), पृ. 43